



कटुआ कीट का समेकित प्रबंधन

सुमन सांजटा*, आर.एस. चंदेल*, शर्मिष्ठा ठाकुर*
और कुलदीप सिंह वर्मा*

कटुआ कीट की मुख्यतः दो प्रजातियां हैं *एग्रोटिस सेजिटम*-आम कटुआ कीट और *एग्रोटिस इपसिलोन*-काला कटुआ कीट। दोनों ही प्रजातियां विभिन्न प्रकार की सब्जियों, फूलों और फसलों को नुकसान पहुंचाती हैं। पहली प्रजाति *एग्रोटिस सेजिटम* ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है और दूसरी *एग्रोटिस इसिलोन* मध्य पर्वतीय और निचले क्षेत्रों में पाई जाती है। ये दोनों प्रजातियां विभिन्न फसलों में लगभग 30 प्रतिशत तक नुकसान करती हैं।

लक्षण तथा क्षति का स्वरूप

कटुआ कीट अपने जीवन में केवल

*कीट विज्ञान विभाग, चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर-176062, (हिमाचल प्रदेश)

सुंडी वाली अवस्था में ही फसलों को नुकसान पहुंचाता है। सुंडी की पांचवीं एवं छठी अवस्थाएं अत्यधिक नुकसानदायक हैं। यह कीट साधारणतः रात के समय फसलों को क्षति पहुंचाते हैं। सुण्डियां पौधों को जमीन की सतह से काटकर पूरी तरह से अलग या आधा काटती हैं। इससे पौधे लटक जाते हैं और पीले पड़ जाते हैं। ये पौधों की पत्तियों को खाकर छेद कर देती हैं तथा पौधों की टहनियों को भी काट देती हैं। यह कीट कटे हुए पौधों के अवशेषों को जमीन के अंदर ले जाता है और दिन के समय उन्हें खाता है। कटे हुए पौधे व मिट्टी में दबे हुए पौधों के अवशेष इस कीट की खेत में उपस्थिति का संकेत देते हैं। कीट का

कटुआ, बहुतायत में पाया जाने वाला एक बहुभक्षी कीट है। यह कीट सब्जी, अनाज तथा दलहन इत्यादि फसलों जैसे-आलू, गोभी, मटर, भिंडी, शिमला मिर्च, बैंगन, टमाटर, खीरा, मक्का, चना तथा सरसों को अत्यधिक नुकसान पहुंचाता है। इस कीट की सुण्डियां दिन के समय मृदा की ऊपरी सतह में छिपकर रहती हैं। रात के समय वे जमीन के बाहर आकर छोटे पौधों को जमीन की सतह के थोड़ा ऊपर से काट देती हैं। ये पत्तों और कोमल तनों को खाती हैं। इसके कारण खेत में पौधों की संख्या प्रत्यक्ष रूप से कम हो जाती है। इनके इसी व्यवहार की वजह से इनको 'कटुआ कीट' का नाम दिया गया है। इस कीट के पतंगे हमेशा रात के समय निकलते हैं और उपयुक्त जगह पर अण्डे देते हैं। ये जमीन में पड़ी दरारों के बीच में या पौधों के तने पर या उसके आसपास के स्थान पर हो सकते हैं। ऐसे क्षेत्र, जहां पर पर्याप्त नमी मौजूद हो, खरपतवार की समस्या ज्यादा हो तथा पानी की निकासी की सुविधा भी न हो, वहां पर इस कीट का प्रकोप ज्यादा देखने को मिलता है। यह कीट पूरे भारत में मैदानी क्षेत्रों से लेकर ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों तक पाया जाता है।

प्रकोप विभिन्न फसलों और विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग देखने को मिलता है।

समेकित प्रबंधन

फसल लगाने से पहले खेत से खरपतवार और पुरानी फसल के अवशेष निकाल लेने चाहिए अन्यथा कीट की सुण्डियां इनमें रहकर इन्हें खाती हैं।

खेत की अच्छे से जुताई कर लेनी चाहिए। इससे यह कीट परजीवी पक्षियों और अन्य कीटों के लिए उपलब्ध हो जाते हैं।

इस कीट के वयस्क शाम के समय सक्रिय होते हैं और रोशनी की तरफ आकर्षित होते हैं। इस प्रकार इन्हें प्रकाश प्रपंच के उपयोग से पकड़कर नष्ट किया जा सकता है।

खेत के चारों तरफ सूरजमुखी की फसल लगानी चाहिए। सूरजमुखी, कटुआ कीट को आकर्षित करते हैं और फसल तक पहुंचने से पहले ही इन्हें नियंत्रित किया जा सकता है।



आलू में प्रकोप

जब कटुआ कीट छोटे होते हैं उसी समय इनका नियंत्रण करना आवश्यक होता है। खेतों में फसल बुआई अथवा पौध रोपण के तुरन्त पश्चात नियमित निगरानी करनी चाहिए। इस दौरान सुबह के समय कटे हुए छोटे पौधों के आसपास की जमीन में सुण्डियां छुपी होती हैं। ऐसे में उनको निकालकर नष्ट कर लेना चाहिए। यदि पांच प्रतिशत से ज्यादा पौधे कटे हुए पाये गये हों, तो फिर कीट को नियंत्रित करना आवश्यक है। कुछ फसलों जैसे-टमाटर, मिर्च में निगरानी फसल तोड़ने तक करनी चाहिए।



प्रकाश प्रपंच



जीवनचक्र

कटुआ कीट पतंगों की संख्या मई-जून और सितम्बर-अक्टूबर के दौरान बहुत अधिक होती है। वयस्क पतंगों का शरीर 18-22 मि.मी. लम्बा व फैले हुए पंखों की चौड़ाई 40-45 मि.मी. होती है। मादा के अगले पंख पीले-भूरे तथा काले रंग के होते हैं। एक मादा 400-1000 अण्डे देती है। अण्डे का विकास 3-5 दिनों में होता है। अण्डे शुरू में सफेद लेकिन समय के साथ भूरे रंग में बदल जाते हैं। सुंडी अवस्था 24-40 दिनों की होती है। पूर्ण विकसित सुंडी 40-45 मि.मी. लम्बी हो जाती है। सुंडी शुरू में हरे-स्लेटी रंग की होती है। पूर्ण विकसित होने के बाद सुंडी मिट्टी में 3-10 सें.मी. गहराई पर प्यूपा बनाती है। यह प्यूपा 10-15 दिनों के बाद वयस्क में परिवर्तित हो जाता है। इसका पूर्ण जीवनचक्र 40-45 दिनों का होता है।



गोभी में प्रकोप

फसल में डेल्टामेथ्रिन 2.8 ई.सी. 750 मि.ग्रा./हैक्टर या क्लोरपाइरिफॉस 20 ई.सी. 2.25 लीटर/हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

ये कीट रात्रि के समय सक्रिय होते हैं। ऐसे में कीटनाशकों का इस्तेमाल शाम के समय करना चाहिए और इनका छिड़काव पौधों के तने की तरफ करना चाहिए।

यदि रसायनों का प्रयोग न करना हो, तो रोगजनक फफूंद जैसे-मेटाराइजियम एनीसोप्ली तथा ब्यूवेरिया बेसियाना का इस्तेमाल कर सकते हैं। रोगजनक सूत्रकृमि जैसे हैटरोरेहबडाइटिस बैक्टीरिओफोरा एवं वायरस जैसे एनपीवी भी कटुआ कीट की रोकथाम के लिए काफी प्रभावी हैं। जैविक नियंत्रण के लिए जमीन में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।

पुस्तक

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का नवीनतम प्रकाशन

दलहनी फसलों की सुरक्षा

लेखक: डा. कृष्ण कुमार, डा. आर.के. मिश्रा, डा. एस.के. सिंह, डा. एन.पी. सिंह

मूल्य: 1000/- रुपये मात्र, डाक व्यय: 100 रुपये

संपर्क: प्रभारी, व्यवसाय एकक, कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,

कृषि अनुसंधान भवन-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012

दूरभाष: 011-25843657, ईमेल: bmicar@icar.org.in